लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

अलहम्दुलिल्लाह वस्सलामो अला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा

बशीर के निधन की घटना पर

ख़ुदा और उसके रसूल की चर्चा पर आधारित व्याख्यान

(सब्ज़ इश्तिहार)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : सब्ज़ इश्तिहार
Name of book : Sabz Ishtihaar
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mouood Alahissalam
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Type, Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi silsila
संस्करण, वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मई 2018 ई.
Edition, Year : 1st Edition (Hindi) May 2018
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)

सब्ज़ इश्तिहार

यह विज्ञापन हज़रात मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन नुक्तः चीनियों (आलोचनाओं) के उत्तर में लिखा जो कुछ विरोधियों ने बशीर प्रथम के निधन पर की थीं। उदाहरणतया यह कि यह वही बच्चा था जिसके बारे में 20 फ़रवरी 1886 ई. और 8 अप्रैल 1886 ई. तथा 17 अगस्त 1887 ई. में यह व्यक्त किया गया था कि वह वैभव एंव प्रतिष्ठा रखने वाला तथा धनी होगा और क़ौमें उस से बरकत पाएंगी और उसमें मुस्लिह मौऊद के नाम और उससे संबंधित भविष्यवाणी का स्पष्टीकरण किया गया।

इस विज्ञापन का असल नाम

"हक़्क़ानी तक़रीर बर वाकिअः वफात-ए-बशीर"

(बशीर के निधन की घटना पर सच्चा भाषण)

है। परन्तु इसके सब्ज़ (हरा) क़ाग़ज़ पर छापने के कारण सब्ज़ इश्तिहार के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ السَّلَامُ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

बशीर के स्वर्गवास की घटना पर सच्चा वक्तव्य

स्पष्ट हो कि इस ख़ाकसार के पुत्र बशीर अहमद के स्वर्गवास से जिसका जन्म 7 अगस्त 1887 ई. को रविवार को हुआ था और 4 नवम्बर 1888 ई. को इसी दिन रविवार को ही अपनी आयु के सोलहवें महीने में सुबह की नमाज़ के समय अपने वास्तविक माबूद (उपास्य) की तरफ़ वापस बुलाया गया। लोगों में अकारण विचित्र प्रकार का कोलाहल और शोर उठा और भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें रिश्तेदारों आदि ने कीं और तरह-तरह की अज्ञानता एवं अक्खड़पन की रायें व्यक्त की गईं। धार्मिक विरोधी जिनका आचरण बात-बात में बेईमानी और झूठी बातें गढ़ना है उन्होंने इस बच्चे की मृत्यु पर पर भांति-भांति के झूठ गढ़ने आरम्भ किए। यद्यपि प्रारंभ में हमारा इरादा न था कि इस मासूम पुत्र के की मृत्यु पर कोई विज्ञापन या भाषण प्रकाशित करें और न प्रकाशित करने की आवश्यकता थी। क्योंकि बीच में कोई ऐसी बात न थी जो किसी बुद्धिमान आदमी के ठोकर का कारण हो सके। परन्तु जब यह शोर एवं कोलाहल चरम सीमा को पहुँच गया और कच्चे तथा क्रोधी स्वभाव रखने वाले मुसलमानों के दिलों पर भी इसका हानिकारक प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई दिया तो हमने मात्र ख़ुदा के लिए यह भाषण प्रकाशित करना उचित समझा अत: पाठकों पर स्पष्ट हो कि कुछ विरोधी स्वर्गीय पुत्र के स्वर्गवास की चर्चा करके अपने विज्ञापनों और अख़बारों में व्यंग्य करते

हुए लिखते हैं कि यह वही बच्चा है जिसके बारे में 20 फरवरी 1886 ई., 8 अप्रैल 1886 ई. और 7 अगस्त 1887 ई. के विज्ञापन में यह प्रकट किया गया था कि वह रोब वाला, प्रतिष्ठावान और धनवान होगा और क़ौमें उस से बरकत पाएंगी। कुछ लोगों ने अपनी तरफ़ से झूठ गढ़कर यह भी★ अपने विज्ञापन में लिखा है कि इस बच्चे के बारे में यह इल्हाम भी प्रकार किया गया था कि यह बादशाहों की बेटियां ब्याहने वाला होगा किन्तु पाठकों पर स्पष्ट हो कि जिन लोगों ने यह मीन-मेख की है उन्होंने बड़ा धोखा खाया है या धोखा देना चाहा है। वास्तविकता यह है कि अगस्त माह 1887 ई. तक जो स्वर्गवासी पुत्र के जन्म का महीना है इस ख़ाकसार की तरफ़ से जितने विज्ञापन छपे हैं जिनका लेखराम पेशावरी ने अपने विज्ञापन में सबूत के कारण के तौर पर हवाला दिया है उन में से कोई व्यक्ति ऐसा अक्षर भी प्रस्तुत नहीं कर सकता जिसमें यह दावा किया गया हो कि मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का था जिसका स्वर्गवास हो गया है अपितु 8 अप्रैल 1886 ई. का विज्ञापन और इसी प्रकार 7 अगस्त 1887 ई. का विज्ञापन कि जो 8 अप्रैल 1886 ई.

★**हाशिया :-** यह झूठ गढ़ने वाला व्यक्ति लेखराम पेशावरी है जिसने तीनों विज्ञापन जो ऊपर मूल इबारत में हैं अपने दावे को सिद्ध करने के उद्देश्य से अपने विज्ञापन में प्रुस्तुत किए हैं। और सर्वथा बेईमानी से काम लिया है। अदाहरणतया वह विज्ञापन 8 अप्रैल 1886 ई. की चर्चा करके अपने विज्ञापन में उसकी यह इबारत लिखता है कि इस विनीत पर इतना स्पष्ट हो गया कि लड़का बहुत ही निकट समय में होने वाला है जो एक गर्भ की अवधि से बाहर नहीं जा सकता परन्तु इस इबारत का अगला वाक्य अर्थात् यह वाक्य कि यह व्यक्त नहीं किया गया कि जो अब पैदा होगा यह वही लड़का है या वह किसी और समय में नौ साल अवधि में पैदा होगा। उसने इस वाक्य को जानबूझ कर नहीं लिखा, क्योंकि यह उसके उद्देश्य के लिए हानिप्रद था और उसके दूषित विचार को जड़ से नष्ट करता था।

के आधार और उसके हवाले से बशीर के जन्म के दिन प्रकाशित किया गया था स्पष्ट बता रहा है कि अभी इल्हामी तौर पर यह फैसला नहीं हुआ कि क्या यह लड़का मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला है या कोई और है। आश्चर्य है कि लेखराम पेशावरी ने पक्षपात के जोश में आकर अपने उस विज्ञापन में जो उसकी गाली गलौज करने की पैदायशी आदत से भरा हुआ है कथित विज्ञापनों के हवाले से ऐतराज़ तो कर दिया, परन्तु आँखें खोलकर उन तीनों विज्ञापनों को पढ़ न लिया ताकि जल्दबाजी की शर्मिन्दगी से बच जाता। बहुत अफ़सोस है कि ऐसे झूठी बातें बनाने वाले लोगों को आर्यों के वे पंडित क्यों झूठ बोलने से मना नहीं करते जो बाज़ारों में खड़े होकर अपना सिद्धान्त यह बताते हैं कि झूठ को छोड़ना और त्यागना और सच को मानना तथा स्वीकार करना आर्यों का धर्म है। अतः विचित्र बात है कि यह धर्म कथन के द्वारा तो हमेशा व्यक्त किया जाता है परन्तु कर्म के समय एक बार भी काम में नहीं आता। अफ़सोस, हज़ार अफ़सोस। अब बात का सारांश यह है कि हर दो विज्ञापन 8 अप्रैल 1886 ई. और 7 अगस्त 1887 ई. उस उपरोक्त

शेष हाशिया - फिर दूसरी बेईमानी यह है कि लेखराम के इस विज्ञापन से पूर्व एक अन्य विज्ञापन आर्यों की ओर से हमारे उपरोक्त वर्णित तीनों विज्ञापनों के उत्तर में चश्मा नूर प्रेस अमृतसर में प्रकाशित हो चुका है। उसमें उन्होंने स्पष्ट तौर पर इक़रार किया है कि उन तीनों विज्ञापनों के देखने से यह सिद्ध नहीं होता कि यह लड़का जो पैदा हुआ है यह वही मुस्लिह मौऊद और आयु (उम्र) पाने वाला है या वह कोई और है। इस इक़रार का लेखराम ने कहीं वर्णन नहीं किया अब स्पष्ट है कि आर्यों का पहला विज्ञापन लेखराम के उस विज्ञापन का स्वयं उन्मूलन (जड़ से उखाड़ देना) करता है। देखो उसका वह विज्ञापन जिसका शीर्षक उनकी स्थिति के अनुसार यह है कि اِنَّ اللّٰهُ لا يُحِبُّ الْمَاكِرِيْن (निसन्देह अल्लाह तआला मक्कारों को पसन्द नहीं करता) (इसी से)

चर्चा और वार्ता से बिल्कुल खामोश हैं कि पैदा होने वाला लड़का कैसा और किन विशेषताओं वाला है बल्कि यह दोनों विज्ञापन स्पष्ट तौर पर गवाही देते हैं कि अभी यह बात इल्हाम की दृष्टि से अस्पष्ट है।★ हाँ ये **प्रशंसाएँ** जो ऊपर गुज़र चुकी हैं एक आने वाले लड़के के बारे में आम तौर पर बिना किसी विशिष्टता तथा निर्धारण के 20 फरवरी 1886 के विज्ञापन में अवश्य वर्णन की गई हैं, परन्तु उस विज्ञापन में यह तो किसी जगह नहीं लिखा कि जो 7 अगस्त 1887 को लड़का पैदा होगा वही उन प्रशंसाओं का पात्र है बल्कि इस विज्ञापन में उस लड़के के पैदा होने की कोई तारीख दर्ज नहीं कि कब और किस समय होगा। अतः यह सोचना कि उन विज्ञापनों में उन प्रशंसाओं का पात्र इसी स्वर्गवासी पुत्र को ठहराया गया था सर्वथा हठधर्मी और बेईमानी है। ये सब विज्ञापन हमारे पास मौजूद हैं और अधिकांश पाठकों के पास मौजूद होंगे। उचित है कि उनको ध्यान से पढ़ें और फिर स्वयं ही इन्साफ करें। अब यह

★हाशिया :- 8 अप्रैल 1886 ई. के विज्ञापन की इबारत यह है कि एक लड़का बहुत ही निकट समय में पैदा होने वाला है जो एक गर्भ की अवधि से आगे नहीं जा सकता, परन्तु यह प्रकट नहीं किया गया कि जो अब पैदा होगा यह वही लड़का है या वह किसी और समय में 9 वर्ष की अवधि में पैदा होगा। देखो विज्ञापन 8 अप्रैल 1886 ई. चश्मा फैज़ क़ादरी प्रैस बटाला। 7 अगस्त 1887 के विज्ञापन की इबारत यह है – "हे दर्शको! मैं आपको ख़ुशख़बरी देता हूँ कि वह लड़का जिसके पैदा होने के लिये मैंने 8 अप्रैल 1886 के विज्ञापन में भविष्यवाणी की थी वह 16 ज़ी क़ा'दा अनुसार 7 अगस्त में पैदा हो गया। देखो विज्ञापन 7 अगस्त 1887 ई. विक्टोरिया प्रेस लाहौर में छपा। अतः क्या इन तीनों विज्ञापनों में लेखराम पेशावरी ने जोश में आकर जो बातें प्रस्तुत की हैं इस बात की गंध तक पाई जाती है कि हमने कभी स्वर्गवासी पुत्र को मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला बताया है। इसलिए विचार करो और चिन्तन करो।

लड़का जो मृत्यु पा गया हो है पैदा हुआ था तो उसकी पैदायश के बाद विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों पत्र इस बारे में पूछ-ताछ के लिए पहुंचे थे कि क्या यह वही मुस्लिह मौऊद है जिसके द्वारा लोग हिदायत पाएंगे तो सब की तरफ़ यही उत्तर लिखा गया था कि इस बारे में अब तक सफाई के साथ कोई इल्हाम नहीं हुआ। हाँ अनुमान के तौर पर ऐसा विचार किया जाता था कि क्या आश्चर्य कि मुस्लिह मौऊद यही लड़का हो और इसका कारण यह था कि इस स्वर्गवासी पुत्र की बहुत सी व्यक्तिगत महानताएं इल्हामों में वर्णन की गई थीं जो उसकी रूह की पवित्रता, उच्च स्वभाव, महान योग्यताओं और रोशन गुणवान और जन्मजात भाग्यशाली के संबंध में थीं और उसकी योग्यता की पूर्णता से संबंध रखती थीं। अतः चूंकि वह योग्यता वाली महानताएं ऐसी नहीं थीं जिनके लिए बड़ी उम्र पाना आवश्यक होता। इसी कारण निश्चित तौर पर किसी इल्हाम के आधार पर इस राय को व्यक्त नहीं किया गया था कि यह लड़का अवश्य लम्बी उम्र तक पहुंचेगा और इसी विचार एवं प्रतीक्षा में 'सिराजे मुनीर' के छापने में विलम्ब किया गया था। ताकि जब भली भांति इल्हामी तौर पर लड़के की वास्तविकता स्पष्ट हो जाए तब उसका विस्तृत विवरण लिखा जाए। इसलिए आश्चर्य और अत्यन्त आश्चर्य कि जिस स्थिति में हम अब तक स्वर्गवासी पुत्र के बारे में इल्हामी तौर पर कोई ठोस राय व्यक्त करने से पूर्णतया खामोश और चुप रहे और इस बारे में कोई भी इल्हाम प्रकाशित न किया तो फिर हमारे विरोधियों के कानों में किस ने फूँक मार दी कि हम ने ऐसा विज्ञापन प्रकाशित कर दिया है।

यह भी स्मरण रहे कि यदि हम इस विचार के आधार पर कि इल्हामी तौर पर स्वर्गवासी पुत्र की व्यक्तिगत महानताएं प्रकट हुईं हैं और उसका नाम मुबश्शर और बशीर और नूरुल्लाह सय्यिद तथा चिराग़ुद्दीन

इत्यादि नाम व्यक्तिगत पूर्णता और प्रकाशमान स्वभाव के आधार पर रखे गए हैं कोई विवरण सहित विस्तृत विज्ञापन भी प्रकाशित करते और उस में उन नामों के हवाले से अपनी यह राय लिखते कि शायद मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का होगा। तब भी विवेकी लोगों की दृष्टि में हमारा यह बयान विवेचना तक आपत्तिजनक न ठहरता। क्योंकि उनका न्यायपूर्ण विचार और उनकी आरिफों (आध्यात्म ज्ञानियों) जैसी दृष्टि उन्हें तुरन्त समझा देती कि यह विवेचन (इज्तिहाद) कुछ ऐसे नामों की स्थिति पर दृष्टि डाल कर किया गया है जो स्वयं में स्पष्ट और खुले-खुले नहीं हैं बल्कि बहुमुखी और तावील⁕ योग्य हैं। इसलिए उनकी दृष्टि में यदि यह एक विवेचनात्मक ग़लती भी मान ली जाती तो वह भी एक व्यक्तिगत स्तर की और उनके विचारों में बहुत कम भार वाली तथा हल्की सी दिखाई देती, क्योंकि यद्यपि एक मूर्ख और धूर्त इन्सान को ख़ुदा तआला का वह प्रकृति का नियम समझाना बहुत कठिन है जो हमेशा से उसकी वह्यी, स्वप्न, कश्फ़ और इल्हामों के सदृश के बारे में है परन्तु जो आरिफ़ (अध्यात्मज्ञानी) और विवेकी लोग हैं वे स्वयं समझे हुए हैं कि भविष्यवाणियों इत्यादि के बारे में यदि कोई विवेचनात्मक ग़लती भी हो जाए तो वह मीन-मेख निकालने योग्य नहीं हो सकती। क्योंकि अधिकतर नबियों और दृढ़ संकल्प रसूलों को भी अपने संक्षिप्त कश्फों और भविष्यवाणियों को निश्चित और निर्धारित करने में ऐसी हलकी-हलकी ग़लतियाँ सामने आती रही हैं★ और उनके सजग दिल

★**हाशिया :-** तौरात की कुछ इबारतों से स्पष्ट है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कुछ भविष्यवाणियों के समझने और समझाने में विवेचन के तौर पर ग़लती की थी और वे आशाएं जो बहुत शीघ्र तथा अविलम्ब मुक्ति प्राप्त

⁕**तावील-** प्रत्यक्ष अर्थ से हटकर व्याख्या करना। (अनुवादक)

और प्रतिभावान अनुयायी उन ग़लतियों से आश्चर्य और परेशानी में हरगिज़ नहीं पड़े क्योंकि वे जानते थे कि ये ग़लतियाँ मूल इल्हामों और कश्फों में नहीं हैं बल्कि तावील करने में ग़लती हो गई है। अतः स्पष्ट है कि जिस स्थिति में उलेमा की विवेचनात्मक ग़लती उनकी प्रतिष्ठा में कमी का कारण नहीं हो सकती और हमने कोई ऐसी विवेचनात्मक (इज्तिहादी) ग़लती भी नहीं की जिसे हम ठोस और निश्चित तौर पर किसी विज्ञापन के द्वारा प्रकाशित करते तो क्यों बशीर अहमद के स्वर्गवास होने पर हमारे अदूरदर्शी विरोधियों ने इतना ज़हर उगला है। क्या उनके पास उन लेखों का कोई पर्याप्त कानूनी सुबूत भी है और अकारण बार-बार अपनी तामसिक वृत्ति की भावनाओं को लोगों पर व्यक्त कर रहे हैं। यहाँ कुछ मूर्ख मुसलमानों की हालत पर भी आश्चर्य है कि वे किस विचार पर भ्रमों के दरिया में डाले जाते हैं। क्या कोई हमारा विज्ञापन उनके पास है जो उन्हें विश्वास दिलाता है कि हम उस लड़के के बारे में इल्हामी तौर पर निश्चित कर चुके थे यही उम्र पाने वाला और मुस्लिह मौऊद है। यदि कोई ऐसा विज्ञापन है तो क्यों प्रस्तुत नहीं किया जाता? हम उनको विश्वास दिलाते हैं कि हमने ऐसा विज्ञापन कोई प्रकाशित नहीं किया। हाँ

शेष हाशिया - होने के लिए बनी इस्राईल को दी गई थीं वे उस प्रकार से प्रकट नहीं हुई थीं। इसलिए बनी इस्राईल ने उन आशाओं के विरुद्ध स्थिति को देखकर और तंग दिल होकर एक बार अपने नी मूर्खता के कारण जो उनकी प्रकृति (आदत) में थी यह भी कह दिया था कि हे मूसा तथा हारुन! जैसा तुम ने हमसे किया ख़ुदा तुम से करे। मालूम होता है कि यह तंगदिली उस मूर्ख क़ौम में इसी कारण से हुई थी कि उन्होंने अपने दिल में मूसा के भाषण की शैली के अनुसार शीघ्र मुक्ति पाने का जो विश्वास कर लिया था उस प्रकार से प्रकटन में नहीं आया था और बीच में ऐसी कठिनाइयाँ आ गई थीं जिनके बारे में बनी इस्राईल को पहले से सफाई के साथ ख़बर नहीं दी गई थी उसका कारण यही था की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को

ख़ुदा तआला ने कुछ इन्हामों में हम पर प्रकट किया था कि यह लड़का जो स्वर्गवासी हो गया है व्यक्तिगत योग्यताओं में उच्च श्रेणी का है और उसके स्वभाव से सांसारिक भावनाएं पूर्णतया नष्ट कर दी गई हैं और उसमें धर्म की चमक भरी हुई है तथा रौशन स्वभाव, मूल्यवान मोती तथा सिद्दीकी (बहुत ही सच्ची) रूह अपने अन्दर रखता है और उसका नाम रहमत की वर्षा (दया वृष्टि), मुबश्शिर, बशीर और प्रताप एवं सौन्दर्य के साथ ख़ुदा का हाथ इत्यादि नाम भी हैं। अतः जो कुछ ख़ुदा तआला ने अपने इल्हामों द्वारा विशेषताएं प्रकट कीं ये सब उसकी विशेषताएं योग्यता के बारे में हैं जिनके लिए बाह्य प्रकटन कोई आवश्यक बात नहीं। इस विनीत का तर्कपूर्ण एवं उचित तौर पर यह दावा है कि जो इन्सानों के बच्चे नाना प्रकार की शक्तियाँ लेकर इस मुसाफ़िर खाने में आते हैं चाहे वे बड़ी उम्र तक पहुँच जाएँ और चाहे वे छोटी उम्र में मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ अपनी स्वाभाविक योग्यताओं में परस्पर अवश्य भिन्न होते हैं और स्पष्ट तौर पर उनकी शक्तियों, आदतों, शक्लों तथा मस्तिष्कों में खुला अन्तर दिखाई देता है, जैसा कि किसी मदरसे में अधिकांश लोगों ने कुछ बच्चे ऐसे देखे होंगे जो अत्यन्त प्रतिभावान (ज़हीन), बुद्धिमान,

---

शेष हाशिया - भी उन बीच की कठिनाइयों को उनके लम्बे खींचे जाने की प्रारम्भ में साफ़ तथा स्पष्ट तौर पर ख़बर नहीं मिली थी। इसलिए इनके विचार का झुकाव विवेचना के तौर पर कुछ इस ओर हो गया था कि सहायता विहीन फ़िरऔन का किस्सा स्पष्ट निशानों से शीघ्रतर साफ़ किया जाएगा। अतः ख़ुदा तआला ने जैसा कि हमेशा से समस्त नबियों से उसकी सुन्नत जारी है पहले दिनों में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को परीक्षा में डालने से तथा उन पर निःस्पृहता का रोब डालने के इरादे से कुछ बीच में आने वाली अप्रिय बातें उन से गुप्त रखीं। क्योंकि यदि समस्त आने वाली बातें और आने वाली कठिनाइयाँ और मुश्किलें पहले ही उन्हें खोलकर बताई जातीं तो उनका दिल पूर्णतया सुदृढ़ और सन्तुष्ट हो जाता तो इस स्थिति में

तीव्र बुद्धि तथा बात को शीघ्र समझ जाने वाले हैं और ज्ञान को इतनी शीघ्रता से प्राप्त करते हैं कि जैसे शीघ्रता से एक चटाई लपेटते जाते हैं, परन्तु उनकी उम्र वफ़ा नहीं करती और छोटी उम्र में ही मर जाते हैं तथा कुछ ऐसे हैं जो अत्यन्त मूर्ख, धूर्त और इन्सानियत का बहुत कम भाग अपने अन्दर रखते हैं और मुंह से लार टपकती है और वह्शी उजड्ड से होते हैं तथा बहुत से बूढ़े एवं वयोवृद्ध होकर मर जाते हैं और अत्यन्त अयोग्य स्वभाव के कारण जैसे आए वैसे ही चले जाते हैं। अतः हमेशा उसका नमूना प्रत्येक व्यक्ति अपनी आँखों से देख सकता है कि कुछ बच्चे ऐसे पूर्ण होते हैं कि सत्यनिष्ठों की पवित्रता और फ़िलास्फ़रों की मानसिक शक्तियाँ और अध्यात्म ज्ञानियों (आरिफों) की रौशनी ख़याली अपने स्वभाव में रखते हैं और होनहार दिखाई देते हैं। किन्तु इस अस्थाई संसार में रह नहीं पाते और कई ऐसे बच्चे भी लोगों ने देखे होंगे कि उनके लक्षण अच्छे दिखाई नहीं देते और विवेक आदेश करता है कि यदि वे आयु पायें तो प्रथम श्रेणी के नीचे, उपद्रवी, मूर्ख, सच्चाई को न पहचानने वाले निकलें। इब्राहीम, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिगर के टुकड़े (सुपुत्र) जो छोटी आयु में अर्थात् सौलहवें महीने

शेष हाशिया - इस परीक्षा का भय उन के दिल से दूर हो जाता जिसका लाना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर और उनके अनुयायियों पर श्रेणियों में उन्नति और आख़िरत का पुण्य (सवाब) ख़ुदा के इरादे में निश्चित हो चुका था। इसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों को इस सांसारिक जीवन में सफलता और समृद्धि के संबंध में जो-जो आशाएं तथा खुशख़बरियां इंजील में दी हैं वे भी प्रत्यक्ष में अत्यन्त सरल और आसान उपायों से शीघ्र ही प्राप्त होने वाली मालूम होती थीं और हज़रत मसीह अलैहिस्साम के खुशख़बरी वाले शब्दों से जो प्रारंभ में उन्होंने वर्णन किए थे ऐसा मालूम होता था कि जैसे उसी युग में उनकी एक शक्तिशाली बादशाहत स्थापित होने वाली है। उसी बादशाही के विचार से हवारियों

में स्वर्गवासी हो गए उसकी योग्यता की सफाई की प्रशंसा और उसकी सत्यनिष्ठों जैसी प्रकृति की विशेषता एवं प्रशंसा हदीसों की दृष्टि से सिद्ध है। ऐसे ही वह बच्चा जो छोटी सी आयु में हज़रत ख़िज्र ने क़त्ल किया था उसकी स्वाभाविक दुष्टता का हाल पवित्र क़ुर्आन के वर्णन से बिल्कुल स्पष्ट है। काफ़िरों के बच्चों के बारे में कि जो छोटी आयु में मर जाएँ जो कुछ इस्लाम की शिक्षा है वह भी वास्तव में इसी नियम के अनुसार है। कि الولدُ سِرٌّ لِاَبِيْهِ के कारण उनकी अपूर्ण योग्यताएं हैं। अतः योग्यता की शुद्धता और उज्ज्वलता असल जौहर एवं पूर्ण धार्मिक अनुकूलता की दृष्टि से स्वर्गीय पुत्र के इल्हाम में वे नाम रखे गए हैं जो अभी वर्णन किए गए हैं। अब यदि कोई ज़बरदस्ती के मार्ग से खींच-तान कर उन नामों को लम्बी उम्रों के साथ संलग्न करना चाहे तो यह उसकी सर्वथा दुष्टता होगी, जिसके बारे में कभी हम ने कोई निश्चित एवं ठोस राये व्यक्त नहीं की। हाँ यह सच है और बिल्कुल सच है कि इन व्यक्तिगत ख़ूबियों की कल्पना करने से सन्देह किया जाता था कि

शेष हाशिया - ने हथियार भी खरीद लिए थे कि सत्ता के समय काम आएंगे। इसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का दोबारा उतरना भी आप ने अपनी ज़बान से ऐसे शब्दों में वर्णन किया था जिससे स्वयं हवारी भी यही समझते थे कि अभी इस युग के लोग मरेंगे नहीं और न हवारी मौत का प्याला पिएंगे कि हज़रत मसीह पुनः अपने प्रताप और प्रतिष्ठा के साथ दुनिया में पधारेंगे और मालूम होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का विचार और राय उसी पद्धति की ओर अधिक झुका हुआ था कि जो उन्होंने हवारियों के मस्तिष्क में बिठाया था जो वास्तव में सही नहीं था। अर्थात् उसमें किसी सीमा तक समझने में ग़लती थी और विचित्र यह कि बाइबल में यह भी लिखा है कि एक बार बनी इस्राईल के चार सौ नबियों ने एक बादशाह की विजय के बारे में ख़बर दी और वह ग़लत निकली! अर्थात् विजय के स्थान पर पराजय हुई। देखो सलातीन बाब 22, आयत 19, परन्तु इस ख़ाकसार की

कदाचित यही लड़का मुस्लिह मौऊद होगा परन्तु वह सन्देहात्मक वर्णन है जो किसी विज्ञापन के द्वारा प्रकाशित नहीं किया गया। हिन्दुओं की हालत पर अत्यन्त आश्चर्य है कि वे इसके बावजूद की अपने नुजूमियों और ज्योतिषियों के मुंह से हज़ारों ऐसी बातें सुनते हैं कि अन्ततः वह सर्वथा निरर्थक, व्यर्थ एवं झूठ निकलती हैं, और फिर उन पर आस्था रखने से नहीं हटते और बहाना प्रस्तुत कर देते हैं कि हिसाब में ग़लती हो गई है अन्यथा ज्योतिष के सच्चा होने में कुछ आपत्ति नहीं। फिर ऐसी छिछोरी और गन्दी आस्थाओं के बावजूद इल्हामी भविष्यवाणियों पर कोई स्पष्ट ग़लती पकड़े बिना पक्षपात पूर्ण प्रहार करते हैं, फिर हिन्दू लोग यदि ऐसी निर्मूल बातें मुंह पर लायें तो कुछ हानि भी नहीं क्योंकि वे धर्म के शत्रु हैं और इस्लाम के मुकाबले पर उनके पास हमेशा से एक ही हथियार है झूठ और झूठ गढ़ना। किन्तु अत्यन्त आश्चर्य में डालने वाली घटना मुसलमानों की हालत है कि दीनदारी (धार्मिकता) और संयम धारण करने के बावजूद तथा इस्लामी आस्थाएं रखने के बावजूद ऐसी अनर्गल बातें ज़बान पर

शेष हाशिया - किसी भविष्यवाणी में कोई इल्हामी ग़लती नहीं। इल्हाम ने घटना से पूर्व दो लड़कों का पैदा होना व्यक्त किया और व्यक्त किया कि कुछ लड़के कम उम्र में मृत्यु को प्राप्त भी होंगे! देखो विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 और विज्ञापन 10 जुलाई 1888। अत: पहली भविष्यवाणी के अनुसार एक लड़का पैदा हो गया और मृत्यु को प्राप्त भी हो गया! तथा दूसरा लड़का जिसके बारे में इल्हाम ने वर्णन किया कि दूसरा बशीर दिया जाएगा, जिसका दूसरा नाम महमूद है। वह यद्यपि अब तक जो दिसम्बर 1888 है पैदा नहीं हुआ। परन्तु ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार अपनी समय सीमा के अन्दर अवश्य पैदा होगा। पृथ्वी-आकाश टल सकते हैं परन्तु उसके वादों का टलना संभव नहीं। मूर्ख उसके इल्हामों पर हंसता है और बेअक़्ल उसकी पवित्र ख़ुशख़बरियों पर ठट्ठा करता है क्योंकि अन्तिम दिन उसकी दृष्टि से छिपा हुआ है और अन्तिम परिणाम उसकी आँखों से ओझल है। इसी से।

लाते हैं, यदि हमारे ऐसे विज्ञापन उन की दृष्टि से गुज़रे होते जिनमें हमने अनुमान के तौर पर स्वर्गीय पुत्र को मुस्लिह मौऊद और आयु पाने वाला बताया होता, तब भी उनकी ईमानी समझ और इरफानी जानकारी की मांग यह होनी चाहिए थी कि यह एक विवेचनात्मक (इज्तिहादी) ग़लती है जो कभी-कभी भौतिक एवं आध्यात्मिक उलेमा दोनों से हो जाती है। यहाँ तक दृढ़ प्रतिज्ञ रसूल भी उस से बाहर नहीं हैं, परन्तु इस स्थान पर तो कोई ऐसा विज्ञापन भी प्रकाशित नहीं हुआ था, केवल

दरिया नादीदा अज़ पा कशीद:

पर अमल किया गया और याद रहे कि हम ने ये कुछ पंक्तियाँ जो आम मुसलमानों के बारे में लिखी हैं केवल सच्ची हमदर्दी के उद्देश्य से लिखी गई हैं ताकि वे अपने निर्मूल भ्रमों से रुक जाएँ और ऐसी रद्दी और दूषित आस्था दिल में पैदा न कर लें जिसका कोई मूल सही नहीं है। बशीर अहमद की मृत्यु पर उन्हीं भ्रमों एवं भ्रान्तियों में पड़ना उन्हीं की मूर्खता प्रकट करता है अन्यथा हाथापाई और मीन-मेख निकालने का स्थान नहीं है। हम बार-बार लिख चुके हैं कि हम ने कोई विज्ञापन नहीं दिया जिसमें हम ने यक़ीन और विश्वास व्यक्त किया हो कि यही लड़का मुस्लिह मौऊद और आयु पाने वाला है। और यद्यपि हम विवेचनात्मक तौर पर उसके प्रत्यक्ष लक्षणों से किसी सीमा तक इस विचार की ओर झुक भी गए थे, परन्तु इसी कारण से इस विचार को खुले-खुले तौर पर विज्ञापनों द्वारा प्रकाशित नहीं किया गया था कि अभी यह बात विवेचनात्मक है। यदि यह विवेचना सही न हुई तो जन सामान्य जो ख़ुदा की सूक्ष्म बातों और मआरिफ़ से केवल अपरिचित हैं वे धोखे में पड़ जायेंगे, परन्तु नितान्त अफ़सोस है कि फिर भी चोपायों के समान लोग धोखा खाने से नहीं रुके, और अपनी ओर से हाशिये चढ़ा लिए। उन्हें

इस बात का तनिक भी ध्यान नहीं कि उनके आरोपों की बुनियाद केवल यह भ्रम है कि विवेचना की ग़लती क्यों हुई। हम इसका उत्तर देते हैं कि प्रथम तो कोई ऐसी विवेचनात्मक ग़लती हम से प्रकट नहीं हुई जिस पर हम ने यक़ीन और विश्वास कर के उसे आम तौर पर प्रकाशित किया हो। फिर कमी करते हुए हम यह पूछते हैं कि यदि किसी नबी या वली से किसी भविष्यवाणी को समझने और निर्धारित करने में कोई ग़लती हो जाए तो क्या ऐसी ग़लती उसके नबुव्वत या वली होने के पद को कुछ कम कर सकती है या घटा सकती है? हरगिज़ नहीं। ये सब विचार मूर्खता और अज्ञानता के कारण आरोप के रूप में पैदा होते हैं। चूंकि इस युग में मूर्खता का प्रसार है और धार्मिक विद्याओं से लोगों की अत्यन्त लापरवाही है। इस कारण सीधी बात भी उलटी दिखाई देती है अन्यथा यह मामला सहमतिपूर्वक माना गया और स्वीकार किया गया है कि प्रत्येक नबी और वली से अपने उन कश्फों और भविष्यवाणियों को समझने एवं निर्धारण में कि जहाँ ख़ुदा तआला की ओर से भली-भाँती नहीं समझाया गया, ग़लती घटित हो सकती है। इस ग़लती से उन नबियों और बुज़ुर्ग लोगों की शान में कुछ भी अन्तर नहीं आता, क्योंकि वह्यी का ज्ञान भी समस्त विद्याओं में से एक विद्या है और जो स्वभाव का नियम तथा प्रकृति के कानून विवेक शक्ति के हस्तक्षेप के समय समस्त विद्याओं एवं कलाओं से संबंधित है, उस नियम से यह विद्या बाहर नहीं रह सकती और जिन लोगों को नबियों तथा वलियों में से यह ज्ञान दिया गया है उनको विवशतापूर्वक अर्थात् उन पर आ पड़ती हैं जिनमें से एक विवेचनात्मक ग़लती भी है। अत: यदि विवेचनात्मक ग़लती आपत्तिजनक है तो यह आपत्ति समस्त नबियों, वलियों और उलेमा में मिली जुली है।

यह भी नहीं समझना चाहिए कि किसी विवेचनात्मक ग़लती से

ख़ुदाई भविष्यवाणियों की शान एवं प्रतिष्ठा में अन्तर आ जाता है या वे मानव जाति के लिए कुछ लाभप्रद नहीं रहतीं या वे धर्म और धार्मिक लोगों को हानि पहुंचाती हैं। क्योंकि विवेचनात्मक ग़लती यदि हो भी तो केवल मध्यवर्ती समयों में बतौर आज़मायश के आती है और फिर इतनी प्रचुरता से सच्चाई के प्रकाश प्रकट होते हैं और ख़ुदा के समर्थन अपने जल्वे दिखाते हैं कि जैसे एक दिन चढ़ जाता है और प्रतिद्वंदियों के सब झगड़ों का उनसे निर्णय हो जाता है, परन्तु उस प्रकाशमान दिन के प्रकट होने से पहले आवश्यक है कि ख़ुदा तआला के भेजे हुए लोगों पर कठिन-कठिन परीक्षाएं आती जाएं और उनके अनुयायी तथा अनुकरण करने वाले भी भली-भांति जांचे और आज़माये जाएँ। ताकि ख़ुदा तआला सच्चों, कच्चों और दृढ़ प्रतिज्ञों तथा कायरों में अन्तर करके दिखा दे।

इश्क अव्वल सरकश व ख़ूनी बुवद
ता गुरेज़ कि बैरूनी बुवद

आज़मायश जो प्रारंभिक स्थिति में नबियों और वलियों पर उतरता है और प्रिय होने के बावजूद अपमान के रंग में उन को प्रकट करती है और मक़बूल (स्वीकार्य) होने के बावजूद कुछ धिक्कारे हुए से करके उनको दिखाता है। यह आज़मायश इसलिए नहीं उतरती कि उनको अपमानित, बरबाद और तबाह करे या संसार से उनका नाम-व-निशान मिटा दे। क्योंकि यह तो हरगिज़ संभव ही नहीं कि महाप्रतापी ख़ुदा अपने प्रेमियों से दुश्मनी करने लगे और अपने सच्चे एवं वफ़ादार प्रेमियों को अपमान के साथ मार डाले अपितु वास्तव में वह आज़मायश कि जो बबर शेर की भाँति और घोर अंधकार के समान उतरती है इसलिए उतरती है ताकि उस चुनी हुई क़ौम को मान्यता के बुलन्द मीनार तक पहुंचा दे और ख़ुदाई मआरिफ़ की बारीक बातें उनको सिखा दे। यही

ख़ुदा की सुन्नत (विधान) है जो सदैव से ख़ुदा तआला अपने प्रिय बन्दों (लोगों) के साथ इस्तेमाल करता चला आया है। ज़बूर में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आज़मायश की स्थिति में विनयपूर्वक नारे उस सुन्नत को प्रकट करते हैं और इंजील में आज़मायश के समय में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का विवशतापूर्वक गिड़गिड़ाना इसी ख़ुदाई आदत को सिद्ध करता है और **पवित्र क़ुर्आन** तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में जनाब रसूलों के गर्व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बन्दगी से मिला हुआ रोना-धोना इसी प्रकृति के कानून की व्याख्या करते हैं।★ यदि मध्य में यह आज़मायश न होती तो अंबिया और औलिया उन उच्चतम श्रेणियों को हरगिज़ न पा सकते कि जो आज़मायश की बरकत से उन्होंने पा लिए। आज़मायश ने उनकी पूर्ण वफ़ादारी और स्थायी इरादे और जान-तोड़ कोशिश की आदत पर मुहर लगा दी और सिद्ध कर दिखाया कि वे आज़मायश के भूकम्पों के समय किस उच्च स्तर की दृढ़ता रखते हैं और कैसे सच्चे वफ़ादार और सच्चे प्रेमी हैं कि उन पर आंधियां चलीं और घोर अन्धकार आए तथा बड़े-बड़े

★हाशिया :- ज़ुबूर में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं में से जो उन्होंने आज़मायश की हालत में की एक यह है - हे ख़ुदा तू मुझ को बचा ले कि पानी मेरी जान तक पहुंचे हैं। मैं गहरी कींच में धंस चला जहाँ खड़े होने का स्थान नहीं, मैं चिल्लाते-चिल्लाते थक गया, मेरी आँखें धुंधला गईं, वे जो अकारण मेरा बैर रखते हैं गिनती में मेरे सर के बालों से अधिक हैं। हे ख़ुदा वन्द, सेनाओं के रब्ब, वे जो तेरी प्रतीक्षा करते हैं मेरे लिए शर्मिन्दा न हों, वे जो तुझको ढूँढ़ते हैं वे मेरे लिए लज्जित न हों, वे जो फाटक पर बैठे हुए मेरे बारे में बकते हैं और नशेबाज़ मेरे हक़ में गाते हैं। तू मेरी भर्त्सना करने और मेरी बदनामी और मेरे अपमान से अवगत है मैंने ताका कि क्या कोई मेरा हमदर्द है कोई नहीं। (देखो ज़ुबूर 69) ऐसा ही हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आज़मायश की रात में जितने गिड़गिड़ाए

भूचाल उन पर आए और वे अपमानित किए गए, और झूठों, मक्कारो और अपमानितों में गिने गए और अकेले और तन्हा छोड़े गए, यहाँ तक कि ख़ुदाई सहायताओं ने भी जिनका उन्हें बड़ा भरोसा था कुछ समय तक मुंह छिपा लिया तथा ख़ुदा तआला ने अपनी अभिभावकीय आदत को सहसा कुछ ऐसा बदल दिया कि जैसे कोई बहुत नाराज़ होता है और उन्हें ऐसी तंगी और तकलीफ़ में छोड़ दिया कि जैसे वे अत्यन्त प्रकोप के पात्र हैं और स्वयं को ऐसा खुश्क सा दिखलाया कि जैसे वह उन पर थोड़ा (भी) मेहरबान नहीं अपितु उनके दुश्मनों पर मेहरबान है और उन की आज़मायशों का सिलसिला बहुत लम्बा हो गया। एक के समाप्त होने पर दूसरी और दूसरे के समाप्त होने पर तीसरी आज़मायश आई। फलतः जैसे घोर अँधेरी रात में वर्षा बड़ी तीव्रता से उतरती है ऐसा ही आज़मायाशों की वर्षाएं उन पर हुईं, पर वे अपने पक्के और दृढ़ इरादे से न रुके और सुस्त और हताश नहीं हुए बल्कि उन पर जितना कष्टों एवं संकटों का भार पड़ता गया उतना ही उन्होंने आगे

शेष हाशिया - वह इंजील से प्रकट हैं। रात भर हज़रत मसीह जागते रहे और जैसे किसी की जान टूटती है शोक और संताप से उन पर ऐसी हालत छायी थी, वह सारी रात रो-रो कर दुआ करते रहे ताकि वह बला का प्याला जो उनके लिए निश्चित था टल जाए, पर इतने रोने-धोने के बावजूद फिर भी दुआ स्वीकार न हुई, क्योंकि आज़मायश के समय की दुआ स्वीकार नहीं हुआ करती। फिर देखना चाहिए कि सय्यिदना-व-मौलाना हज़रत फ़ख़रुर्रुसुल-व-ख़ातमुन्नबिय्यीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज़मायश की हालत में क्या-क्या कष्ट उठाये और एक दुआ में ख़ुदा से आत्म निवेदन किया कि हे मेरे रब्ब मैं अपनी कमज़ोरी की तेरे आगे शिकायत करता हूँ और अपने असहाय होने का तेरी चौखट पर उलाहना देने वाला हूँ। मेरा अपमान तेरी सृष्टि से छिपा हुआ नहीं, जितनी चाहे कठोरता कर कि मैं राज़ी हूँ जब तक कि तू राज़ी हो जाए। मुझ में तेरे सिवा कुछ भी शक्ति नहीं। (इसी से)

क़दम बढ़ाया और जितने वे तोड़े गए उतने ही वे सुदृढ़ होते गए तथा उन्हें जितनी मार्ग की कठिनाइयों का भय दिलाया गया उतनी ही उनकी हिम्मत बुलन्द और निजी बहादुरी जोश में आती गयी। अन्ततः वे उन समस्त परीक्षाओं से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर निकले और अपनी पूर्ण सच्चाई की बरकत से पूर्ण रूप से सफल हो गए और सम्मान तथा प्रतिष्ठा का ताज उनके सर पर रखा गया और मूर्खों के समस्त आरोप ऐसे बुलबुलों की तरह समाप्त हो गए कि जैसे वे कुछ भी नहीं थे। अतः अंबिया और औलिया आज़मायश से खाली नहीं होते बल्कि सब से अधिक आज़मायशें उन्हीं पर आती हैं और उन्हीं की ईमानी शक्ति उन आज़मायशों को सहन भी करती है। जन सामान्य जैसे ख़ुदा तआला को पहचान नहीं सकते वैसे ही उसके निष्कपट लोगों के पहचानने से भी असमर्थ हैं। विशेष तौर पर उन ख़ुदा के प्रेमियों की आज़मायशों के समयों में जन साधारण तो बड़े-बड़े धोखों में पड़ जाते है, मानो डूब ही जाते हैं और इतना सब्र (धैर्य) नहीं कर सकते कि उनके अंजाम के प्रतीक्षक रहें। लोगों को यह मालूम नहीं कि महा वैभवशाली ख़ुदा जिस पौधे को अपने हाथ से लगाता है उसकी डालियों की इस उद्देश्य से काट-छांट नहीं करता कि उसे समाप्त कर दे, अपितु इस उद्देश्य से करता है ताकि वह पौधा फूल और फल अधिक लाये और उसके पत्ते और फल में बरकत हो। अतः सारांश यह है कि नबियों और वलियों का आन्तरिक प्रशिक्षण और रूहानी (आध्यात्मिक) पूर्णता के लिए उन पर आज़मायशों का आना आवश्यकताओं में से है और आज़मायश इस क़ौम के लिए ऐसी अनिवार्य है कि जैसे इन ख़ुदा के सेनानियों की एक रूहानी वर्दी है जिस से यह पहचाने जाते हैं और जिस व्यक्ति को इस सुन्नत के विपरीत कोई सफ़लता हो वह इस्तदराज (दैनिक कार्य

से हट कर बात है) न कि सफ़लता। इस के अतिरिक्त स्मरण रखना चाहिए कि यह बड़ा दुर्भाग्य है कि मनुष्य शीघ्र ही कुधारणा की ओर झुक जाए और यह नियम ठहराए कि संसार में जितने ख़ुदा तआला के मार्ग के दावेदार हैं वे सब मक्कार, धोखेबाज़ और और दुकानदार ही हैं। क्योंकि ऐसी बेकार आस्था से धीरे-धीरे विलायत के अस्तित्व में सन्देह पड़ेगा और फिर विलायत (वली का पद) से इन्कारी होने के बाद नबुव्वत के पद में कुछ कुछ असमंजस पैदा हो जाएंगे और फिर नबुव्वत से इन्कारी होने के पीछे ख़ुदा तआला के अस्तित्व में कुछ शंका और दुविधा पैदा हो कर दिल में यह धोखा आरंभ हो जाएगा कि शायद यह सारी बात ही बनावटी और निर्मूल है और शायद यह सब भ्रम मिथ्या ही हैं कि जो लोगों के दिलों में जलते हुए चले आए हैं। अत: हे सच्चाई के साथ प्राण और दिल से प्रेम करने वालो! और सच्चाई के भूखो और प्यासो! निश्चित समझो कि ईमान को इस झगड़े-फ़साद के घर (संसार) से सुरक्षित ले जाने के लिए विलायत (वली का पद) और उसके आवश्यक सामान का विश्वास अत्यंत बड़ी आवश्यकताओं में से है। विलायत नुबुव्वत की आस्था की शरण है और नुबुवत ख़ुदा तआला की शरण। अत: औलिया, नबियों के अस्तित्व के लिए सीखों (कीलों) के समान हैं और अंबिया (नबी का बहुवचन) ख़ुदा तआला की हस्ती क़ायम करने के लिए अत्यन्त सुदृढ़ कीलों के समान हैं। अत: जिस व्यक्ति को किसी वली के अस्तित्व पर देखने के तौर पर पहचान प्राप्त नहीं उसकी दृष्टि नबी की पहचान से भी असमर्थ है और जिसको नबी की पूर्ण पहचान नहीं वह ख़ुदा तआला को पूर्ण रूप से पहचानने से भी अनभिज्ञ है और एक दिन अवश्य ठोकर खा जाएगा और सख्त ठोकर खाएगा और अकेले बौद्धिक तर्क और पारंपरिक विद्याएँ किसी

काम नहीं आएँगी। अब हम जनहित में यह भी लिखना उचित समझते हैं कि बशीर अहमद की मृत्यु अचानक नहीं हुई बल्कि महा प्रतापी ख़ुदा ने उसके निधन से पूर्व इस ख़ाकसार को अपने इल्हामों के माध्यम से पूरी-पूरी अन्तर्दृष्टि प्रदान कर दी थी कि यह लड़का अपना काम कर चुका है।★ और अब मृत्यु पा जाएगा अपितु जो इल्हाम इस स्वर्गवासी बेटे की पैदायश के दिन हुए थे उन से भी संक्षिप्त तौर पर उसके निधन की गंध आती थी और प्रकट होता था कि वह लोगों के लिए एक बड़ी परीक्षा का कारण होगा। जैसा कि यह इल्हाम

اِنَّا اَرْسَلْنٰهُ شاھداًوَ مبشراًو نذیراً کَصَیِّب مّن السَّماء فیه ظُلُمٰت
ورعدوبرق کل شیئ تحت قدمَیْه

अर्थात् हमने उस बच्चे को शाहिद, मुबश्शिर और नज़ीर होने की हालत में भेजा है और यह उस बड़े मेंह के समान है जिस में भिन्न-भिन्न प्रकार के अंधेरे हों और कड़क तथा बिजली भी हों। ये सब चीज़ें उसके

★**हाशिया :-** ख़ुदा तआला की रहमत के उतरने और रूहानी बरकत के प्रदान करने के लिए बड़ी महान दो पद्धतियां है -

(1) प्रथम यह कि कोई संकट और शोक-संताप उतार का सब्र करने वालों पर क्षमा और रहमत के दरवाज़े खोले जैसा कि उसने स्वयं फ़रमाया है -

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ الَّذِیْنَ اِذَآ اَصَابَتْھُمْ مُّصِیْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ
اُولٰٓئِکَ عَلَیْھِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّھِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُھْتَدُوْنَ
(अलबक़रह - 156 से 158)

अर्थात् हमारा यही प्रकृति का नियम है कि हम मोमिनों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के संकट डाला करते थे और सब्र करने वालों पर हमारी रहमत उतरती है और सफलता के मार्ग उन्हीं पर खोले जाते हैं जो सब्र करते हैं।

(2) दूसरी पद्धति रहमत के उतरने की रसूलों और नबियों, इमामों, वलियों और ख़ुलफ़ा हैं। ताकि उनकी पैरवी और हिदायत से लोग सद्मार्ग पर आ जाएं

दोनों क़दमों के नीचे हैं अर्थात् उसके क़दम उठाने के बाद जो उसकी मौत से अभिप्राय है प्रकटन में आ जाएँगी। अतः अंधेरों से अभिप्राय आज़मायश और परीक्षा के अँधेरे थे, जो लोगों को उसकी मौत से पेश आईं और ऐसी कठिन परीक्षा में पड़ गए जो अंधेरों की भांति था और पवित्र आयत

(अलबक़रह - 21) واذا اَظْلَمَ عَلَيْهِم قامُوْا

के चरितार्थ हो गए। इल्हामी इबारत में जैसा कि अँधेरे के बाद कड़क और रौशनी का वर्णन है अर्थात् जैसा कि इस इबारत के वर्णन के क्रम से प्रकट होता है कि स्वर्गवासी बेटे के क़दम उठाने के बाद पहला अँधेरा आएगा और फिर कड़क और बिजली। इसी क्रम के अनुसार इस भविष्यवाणी का पूरा होना आरंभ हुआ अर्थात् पहले बशीर की मृत्यु के कारण परीक्षा का अँधेरा आया और फिर उसके बाद कड़क और रौशनी प्रकट होने वाली है। और जिस प्रकार अँधेरा प्रकटन में आ गया उसी प्रकार निस्सन्देह जानना चाहिए कि किसी दिन वह

शेष हाशिया - और स्वयं को उनके आदर्श पर बना कर मुक्ति पा जाएँ। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस ख़ाकसार की सन्तान के द्वारा ये दोनों भाग प्रकटन में आ जाएँ। अतः प्रथम उसने प्रथम प्रकार की रहमत उतारने के लिए बशीर को भेजा ताकि بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ का सामान मोमिनों के लिए जो उसके निधन के शोक में केवल अल्लाह के लिए सम्मिलित हुए बतौर फ़र्त✶ के होकर ख़ुदा तआला की ओर से उनका सिफारिश करने वाला ठहर गया और अन्दर ही अन्दर उनको बहुत सी बरकतें पहुंचा गया, और यह बात स्पष्ट तौर पर ख़ुदा तआला के इल्हाम ने व्यक्त कर दी कि बशीर जो मृत्यु पा गया है वह बेफ़ायदा नहीं आया था अपितु उसकी मृत्यु उन सब लोगों के जीवन का कारण होगी जिन्होंने केवल ख़ुदा के लिए उसकी मौत से शोक किया और उस आज़मायश को सहन कर गए कि जो

✶ **फ़र्त -** पेश खैमः, किसी होने वाले काम की भूमिका (तैयारी), (अनुवादक)

कड़क और वह रौशनी भी प्रकटन में आ जाएगी जिसका वादा दिया गया है। जब वह रौशनी आएगी तो अँधेरे के विचारों को सीनों और दिलों से सर्वथा मिटा देगी और जो, जो ऐतिराज़ लापरवाह लोगों तथा मुर्दा दिलों के मुंहों से निकले हैं उनको नष्ट और लुप्त कर देगी। यह इल्हाम जिसका अभी हम ने उल्लेख किया है आरंभ से सैकड़ों लोगों को विवरण सहित सुना दिया गया था। अत: उन सब सुनने वालों में से मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी भी हैं तथा कई अन्य प्रतिष्ठावान लोग भी। अब यदि हमारे मित्र और विरोधी जन उसी इल्हाम के विषय पर विचार करें और गहरी दृष्टि से देखें तो यही प्रकट कर रहा है कि उस अँधेरे के आने से पहले ख़ुदा के दरबार में इरादा हो चुका था जो इल्हाम द्वारा बताया गया और स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया गया कि अँधेरा और रोशनी दोनों उस लड़के के क़दमों के नीचे हैं अर्थात् उसके क़दम उठाने के बाद जिससे अभिप्राय मौत है उनका

शेष हाशिया - उसकी मौत से प्रकटन में आई। अत: बशीर हज़ारों सब्र करने वालों और सच्चों के लिए एक सिफारिश करने वाले की तरह पैदा हुआ था और उस पवित्र आने वाले और पवित्र जाने वाले की मौत उन सब मोमिनों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी। रहमत का दूसरा प्रकार जो अभी हमने वर्णन किया उसे पूर्ण करने के लिए ख़ुदा दूसरा बशीर भेजेगा जैसा कि बशीर प्रथम की मौत से पहले 10 जुलाई 1888ई के विज्ञापन में उसके बारे में भविष्यवाणी की गई है। और ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार पर प्रकट किया कि एक दूसरा बशीर तुम्हें दिया जाएगा, जिसका नाम महमूद भी है। वह अपने कामों में दृढ़ प्रतिज्ञ होगा يخلق الله مايشآء और ख़ुदा तआला ने मुझ पर यह भी प्रकट किया कि 20 फ़रवरी 1886ई की भविष्यवाणी वास्तव में दो सौभाग्यशाली लड़कों के पैदा होने पर आधारित थी, और इस इबारत तक कि मुबारक वह जो आकाश से आता है, पहले बशीर के बारे में भविष्यवाणी हो जो रुहानी तौर पर रहमत के उतरने का कारण हुआ और उसके बाद की इबारत दूसरे बशीर के बारे में है। (इसी से)

आना आवश्यक है। अत: हे वे लोगो! जिन्होंने अँधेरे को देख लिया हैरानी में मत पड़ो अपितु प्रसन्न हो और प्रसन्नता से उछलो और यह कि इसके बाद अब रोशनी आएगी। बशीर की मौत ने जैसा कि इस भविष्यवाणी को पूरा किया ऐसा ही उस भविष्यवाणी को भी कि जो 20 फ़रवरी के विज्ञापन में है कि कुछ बच्चे कम आयु में मृत्यु पाएंगे।

अन्तत: यह भी यहाँ स्पष्ट रहे कि हमारा अपने काम के लिए पूर्ण रूप से भरोसा अपने कृपालु मौला (ख़ुदा) पर है। इस बात से कुछ मतलब नहीं कि लोग हम से सहमति रखते हैं या अस्वीकार तथा हमारी प्रशंसा करते हैं अथवा धिक्कारते हैं बल्कि हम सब से विमुख होकर और अल्लाह के अतिरिक्त को मुर्दे के समान समझ कर अपने कार्य में लगे हुए हैं। यद्यपि हम में से कुछ और हमारी ही क़ौम में से ऐसे भी हैं कि हमारे इस ढंग को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं परन्तु हम उनको असमर्थ रखते हैं और जानते हैं कि जो हम पर प्रकट किया गया है वह उन पर प्रकट नहीं और जो प्यास हमें लगा दी गई है वह उन्हें नहीं।

كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ (बनी इस्राईल - 85)

यहाँ यह भी लिखना उचित समझता हूँ कि मुझे कुछ विद्वान लोगों के नसीहत भरे लेखों से मालूम हुआ कि वे भी इस ख़ाकसार की यह कार्रवाई पसन्द नहीं करते कि रूहानी बरकतें और आसमानी निशानों के सिलसिले को जो दुआओं के स्वीकार होने के द्वारा और इल्हामों एवं कश्फों के द्वारा पूर्ण होता है लोगों पर व्यक्त किया जाए। उनमें से कुछ की इस बारे में यह बहस है कि ये बातें अनुमान और सन्देह वाली हैं और उनसे हानि की आशा उनके लाभ से अधिकतम है। वे यह भी कहते हैं कि वास्तव में ये बातें समस्त लोगों में साझी

और समान हैं शायद कुछ कमी-बेशी हो अपितु कुछ लोगों का विचार है कि लगभग एक ही समान हैं। उनका यह भी कहना है कि इस संबंध में कुछ हस्तक्षेप नहीं अपितु स्वाभाविक विशेषताएं हैं जो मनुष्य के स्वभाव के साथ संलग्न है और प्रत्येक मनुष्य से मोमिन हो या काफ़िर, सदाचारी हो या पापी कुछ थोड़ी सी कमी-बेशी के साथ जारी होती रहती हैं, यह तो उनका तर्क-वितर्क है जिससे उसकी मोटी समझ और सतही विचारों एवं उनके ज्ञान की पहुँच का अनुमान हो सकता है परन्तु सही विवेक से यह भी मालूम होता है कि लापरवाही और संसार से प्रेम का कीड़ा उनके ईमान विवेक को बिल्कुल खा गया है। उनमें से कुछ ऐसे हैं कि जैसे कोढ़ी का कोढ़ चरम सीमा तक पहुँच कर अंगों के गिरने तक नौबत पहुंचाता है और हाथ-पाँव का गलना-सड़ना आरंभ हो जाता है। इसी प्रकार उनके रूहानी अंग जो रूहानी शक्तियों से अभिप्राय है संसार से इन्तिहाई प्रेम के कारण गलने-सड़ने आरंभ हो गए हैं और उनकी पद्धति हंसी, ठट्ठा, कुधारणा और बदगुमानी (बुरी धारणा) है। धार्मिक मआरिफ़ और सच्चाइयों पर विचार करने से पूर्णतया आज़ादी है, अपितु ये लोग सच्चाई और मारिफ़त (ख़ुदा की पहचान) से कुछ सरोकार नहीं रखते और कभी आँख उठा कर नहीं देखते कि हम संसार में क्यों आए और हमारा असली कमाल (गुण) क्या है अपितु मृत संसार में दिन-रात डूब रहे हैं, उनमें यह संवेदन शक्ति ही शेष नहीं रही कि वह अपनी हालत को टटोलें कि वह सच्चाई के मार्ग से कैसी गिरी हुई है और उनका बड़ा दुर्भाग्य यह है कि लोग अपने अत्यन्त भयंकर रोग को पूर्णतया स्वस्थ समझते हैं और जो वास्तविक स्वास्थ्य और तंदुरूस्ती है उसे अपमान और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और विलायत की विशेषतायें तथा ख़ुदा के सानिध्य (क़ुर्ब) की श्रेष्ठता

उनके दिलों से बिल्कुल समाप्त हो गई है और निराशा तथा दुर्भाग्य की सी स्थिति पैदा हो गई है अपितु यही स्थिति रही तो उनका नुबुव्वत पर ईमान क़ायम रहना भी ख़तरे में ही दिखाई देता है।

यह भायावह और गिरी हुई स्थिति जो मैंने कुछ उलेमा की वर्णन की है उसका कारण यह नहीं है कि वे इन रूहानी प्रकाशों को अनुभव की दृष्टि से असंभव, सन्देह और अनुमान युक्त समझते हैं। क्योंकि उन्होंने अभी तक पूर्ण रूप से अनुभव करने की ओर ध्यान नहीं दिया और पूर्ण एवं व्यापक तौर पर दृष्टि डाल कर राय व्यक्त करने का अभी तक उन्होंने अपने लिए कोई अवसर पैदा नहीं किया और न पैदा करने की कुछ परवाह है केवल उन फ़साद युक्त मीन-मेख को देख कर जो पक्षपाती विरोधियों ने इस ख़ाकसार की दो भविष्यवाणियों पर की है★ छान-बीन और खोज के सन्देह में पड़ गए और विलायत एवं ख़ुदा के सानिध्य के प्रकाशों के बारे में दिल में एक ऐसी आस्था बिठा ली कि

★हाशिया :- वे मीन-मेख ये हैं कि 8 अप्रैल 1886ई के विज्ञापन में इस ख़ाकसार ने एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि एक लड़का इस ख़ाकसार के घर में पैदा होने वाला है और कथित विज्ञापन में स्पष्टतापूर्वक लिख दिया था कि शायद इसी बार वह लड़का पैदा हो या इसके बाद इसके निकट गर्भ में पैदा हो। अत: ख़ुदा तआला ने विरोधियों की आन्तरिक मलिनता और अन्याय प्रकट करने के लिए इस बार अर्थात् पहले गर्भ में लड़की पैदा की और उसके बाद जो गर्भ हुआ तो उस से लड़का पैदा हुआ और भविष्यवाणी अपने अर्थ के अनुसार सच्ची निकली और ठीक-ठीक घटित हो गई और विरोधियों ने जैसी कि उनकी सदैव से पद्धति है केवल दुष्टता के मार्ग से यह नुक्त:चीनी की कि पहली बार ही लड़का क्यों पैदा नहीं हुआ। उनको उत्तर दिया गया कि विज्ञापन में पहली बार की कोई शर्त नहीं अपितु दूसरे गर्भ तक पैदा होने की शर्त थी जो घटित हो गई और भविष्यवाणी बड़ी सफ़ाई से पूरी हो गई। इसलिए इस भविष्यवाणी पर नुक्त:चीनी करना बेईमानी के प्रकारों में से एक प्रकार है। कोई न्याय करने वाला

जो शुष्क (नीरस) दर्शनशास्त्र और अंधी नेचरियत के करीब-करीब है। इन्हें सोचना चाहिए था कि विरोधियों ने अपने झुठलाने के समर्थन में कौन सा सबूत दिया है? फिर यदि कोई सबूत नहीं और निरी बक-बक है तो क्या व्यर्थ और निराधार झूठ गढ़ने का प्रभाव अपने दिलों में डाल लेना बुद्धिमत्ता और ईमानी दृढ़ता में सम्मिलित है और यदि मान लिया जाए कि कोई विवेचनात्मक ग़लती भी भविष्यवाणी के संबंध में इस ख़ाकसार से प्रकट होती अर्थात् निश्चित और विश्वास के तौर पर उसे किसी विज्ञापन के द्वारा प्रकाशित किया जाता तब भी किसी बुद्धिमान की दृष्टि में वह हाथापाई का स्थान नहीं हो सकती थी क्योंकि विवेचनात्मक ग़लती एक ऐसी बात है जिस से अंबिया भी बाहर नहीं। इसके अतिरिक्त यह ख़ाकसार अब तक सात हज़ार सच्चे कश्फ़ और सही इल्हामों से ख़ुदा तआला की ओर से सम्मानित हुआ है और भविष्य में रूहानी चमत्कारों का ऐसा असीम सिलसिला जारी है कि जो वर्षा की भाँति दिन-रात उतरते

शेष हाशिया - इसको निश्चित तौर पर नुक्त:चीनी नहीं कह सकता दूसरी नुक्त:चीनी विरोधियों की यह है कि लड़का जिसके बारे में 8 अप्रैल 1886 के विज्ञापन में भविष्यवाणी की थी वह पैदा होकर छोटी आयु में स्वर्गवासी हो गया उसका विवरण सहित उत्तर इस वर्णन में दर्ज है तथा उत्तर का खुलासा यह है कि हमने आज तक किसी विज्ञापन में नहीं लिखा कि यह लड़का आयु पाने वाला होगा और न यह कहा कि यही मुस्लिह मौऊद है अपितु हमारे 20 फ़रवरी 1886 के विज्ञापन में हमारे कुछ लड़कों के बारे में यह भविष्यवाणी मौजूद थी कि वे छोटी आयु में मृत्यु पाएँगे। अत: सोचना चाहिए कि इस लड़के के निधन से एक भविष्यवाणी पूरी हुई या झूठी निकली अपितु हमने जितने इल्हाम लोगों में प्रकाशित किए अधिकतर उनके इस लड़के की मृत्यु को सिद्ध करते थे। अत: 20 फ़रवरी 1886ई के विज्ञापन की यह इबारत कि एक सुन्दर, पवित्र लड़का तुम्हारा मेहमान आता है। यह मेहमान का शब्द वास्तव में उसी लड़के का नाम रखा गया था और यह उसकी छोटी आयु और शीघ्र निधन होने को सिद्ध करता है क्योंकि मेहमान

रहते हैं। अत: इस स्थिति में भाग्यशाली मनुष्य वह है जो स्वयं को श्रद्धा एवं निष्ठा से इस ख़ुदाई कारखाने के हवाले कर के आसमानी वरदानों से स्वयं को लाभान्वित करे और अत्यन्त अभागा वह व्यक्ति है जो स्वयं को उन प्रकाशों एवं बरकतों की प्राप्ति से लापरवाह रख कर निराधार नुक्त:चीनियां और मूर्खता पूर्ण राय व्यक्त करना अपनी पद्धति बना ले। मैं ऐसे लोगों को केवल ख़ुदा के लिए सचेत करता हूँ कि वे ऐसे विचारों को दिल में स्थान देने से सच और सच देखने से बहुत दूर जा पड़े हैं। यदि उनका यह कथन सच हो कि इल्हाम और कश्फ़ कोई ऐसी अच्छी चीज़ नहीं है जो विशेष जन और जन सामान्य या काफ़िर और मोमिन में कोई स्पष्ट अन्तर पैदा कर सके तो साधकों के लिए यह अत्यन्त दिल तोड़ने वाली घटना होगी। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ यही इस्लाम में एक रूहानी और उच्च श्रेणी की विशेषता है कि उस पर सच्चाई से क़दम मारने वाले (चलने वाले) ख़ुदा के विशेष वार्तालाप से सम्मानित

शेष हाशिया - वही होता है जो कुछ दिन रहकर चला जाए और देखते-देखते विदा हो जाए और जो क़ायम मक़ाम हो और दूसरों को विदा करे उसका नाम मेहमान नहीं हो सकता। कथित विज्ञापन की यह इबारत कि वह रिज्स से (अर्थात् गुनाह से) पूर्णतया पवित्र है यह भी उसकी कम आयु को सिद्ध करती है। यह धोखा नहीं लगना चाहिए कि जिस भविष्यवाणी का वर्णन हुआ है वह मुस्लिह मौऊद के पक्ष में है। क्योंकि इल्हाम द्वारा स्पष्ट तौर पर खुल गया है कि ये सब इबारतें स्वर्गवासी बेटे के पक्ष में हैं और जो भविष्यवाणी मुस्लिह मौऊद के पक्ष में है, वह इस इबारत से आरम्भ होती है कि उसके साथ फ़ज़्ल है जो उसके आने के साथ आएगा। अत: मुस्लिह मौऊद का नाम इल्हामी इबारत में फ़ज़्ल रखा गया और उसका दूसरा नाम महमूद और तीसरा नाम उसका बशीर द्वितीय भी है। और एक इल्हाम में उसका नाम फ़ज़्ले उमर प्रकट किया गया है और आवश्यक था कि उसका आना विलम्ब में पड़ा रहता जब तक यह बशीर जो मृत्यु पा गया है पैदा होकर फिर वापस उठाया जाता क्योंकि ये सब मामले ख़ुदा की हिक्मत ने उसके

हो जाते हैं और स्वीकार्यता के प्रकाश जिनमें उन का ग़ैर उनके साथ भागीदारी नहीं हो सकता उनके अस्तित्व में पैदा हो जाते हैं। यह एक अटल सचाई है जो असंख्य सत्यनिष्ठों पर अपने अनुभव से खुल गई है। इन उच्चतम श्रेणियों पर वे लोग पहुँचते हैं जो सच्चा और वास्तविक अनुकरण मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का करते हैं और कामवासना संबंधी अस्तित्व से निकल कर ख़ुदाई अस्तित्व का कुर्ता पहन लेते हैं अर्थात् कामभावनाओं पर मौत लाकर ख़ुदाई अनुकरणों का नया जीवन अपने अन्दर प्राप्त करते हैं। दोषपूर्ण स्थिति रखने वाले मुसलमानों को उनसे कुछ तुलना नहीं होती। फिर काफ़िर और पापी को उनसे क्या तुलना हो। उनकी यह पूर्णता उनकी संगत में रहने से सत्याभिलाषी पर खुलती है। इसी उद्देश्य से मैंने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए भिन्न-भिन्न समुदायों के प्रमुखों की ओर विज्ञापन भेजे थे और पत्र लिखे थे कि वे मेरे इस दावे की आज़मायश

शेष हाशिया - क़दमों के नीचे रखे थे और बशीर प्रथम जिसका निधन हो गया है बशीर द्वितीय के लिए बतौर इर्हास था। इसलिए दोनों का एक ही भविष्यवाणी में वर्णन किया गया।

अब एक इन्साफ करने वाला इन्साफ के अनुसार सोच कर देखे कि हमारी इन दोनों भविष्यवाणियों में वास्तविक तौर पर कौन सी ग़लती है? हाँ हमने स्वर्गवासी बेटे की योग्यताओं के गुण इल्हामों के माध्यम से प्रकट किए थे कि वह स्वाभाविक तौर पर ऐसा है और ऐसा है और अब भी हम यही कहते हैं तथा स्वाभाविक योग्यताओं का विभिन्न तौर पर बच्चों में पाया जाना सामान्य इस के कि वे छोटी आयु में मर जाएँ या जीवित रहें यह ऐसा मामला है जिस पर समस्त धर्मों की सहमति है दार्शनिकों एवं उलेमा में से कोई इसका इन्कारी नहीं हो सकता। अतः बुद्धिमान के लिए ठोकर खाने का कौन सा कारण है। हाँ मूर्ख और धूर्त लोग हमेशा से ठोकर खाते चले आए हैं। बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी पर ठोकर खाई कि यह आदमी तो कहता था कि फ़िरऔन पर अज़ाब

करें। यदि उन को सच्चाई की अभिलाषा होती तो वे दृढ़ प्रतिज्ञ हो कर उपस्थित होते। पर उनमें से कोई एक भी दृढ़ प्रतिज्ञ होकर उपस्थित न हुआ, बल्कि जब कोई भविष्यवाणी प्रकट होती रही उस पर धूल डालने के लिए प्रयास करते रहे। अब यदि हमारे उलेमा को इस वास्तविकता को स्वीकार करने और मानने में कुछ संकोच है तो ग़ैरों को बुलाने की क्या आवश्यकता। पहले ही हमारे मित्र लोग जिनमें से कुछ विद्वान और आलिम भी हैं, परीक्षा कर लें तथा सच्चाई और सब्र से कुछ समय मेरी संगत में रहकर वास्तविक स्थिति से परिचित हो जाएँ। फिर यदि इस ख़ाकसार का यह दावा सच्चाई से खाली निकले तो मैं उन्हीं के हाथ पर तौबा कर लूँगा अन्यथा आशा रखता हूँ कि ख़ुदा तआला उनके दिलों पर तौबा और रुजू (लौटने) का दरवाज़ा खोल देगा और यदि वे मेरे इस लेख के प्रकाशित होने के बाद मेरे दावों को परख कर अपनी राय के साथ पूरी सच्चाई पहुंचा दें तो उनकी नसीहत वाली तहरीरों (लेखों) के कुछ मायने होंगे, इस समय तक तो उसके कुछ भी मायने नहीं, बल्कि उनकी गुप्त हालत दयनीय है। मैं भली-भाँति जानता हूँ आजकल के

शेष हाशिया - उतरेगा। अतः उस पर तो कुछ अज़ाब नहीं उतरा, वह अज़ाब तो हम पर ही पड़ा कि इससे पहले हम से केवल आधा दिन ही मेहनत ली जाती थी और अब सारा दिन मेहनत करने का आदेश हो गया। खूब मुक्ति हुई। हालाँकि यह दोहरी मेहनत और परिश्रम परीक्षा के तौर पर प्रारंभ में यहूदियों पर आई थी और अन्ततः फ़िरऔन का मरना प्रारब्ध था। परन्तु उन मूर्खों और जल्दबाज़ों ने हाथ पर सरसों जमती न देख कर उसी समय हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुठलाना शुरू कर दिया और कुधाराणा में पड़ गए तथा कहा कि हे मूसा और हारून जो कुछ तुम ने हम से किया ख़ुदा तुम से करे। फिर यहूदी इस्क्रियूती की मूर्खता और जल्दबाज़ी देखनी चाहिए कि उसने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के समझने में बहुत बड़ी ठोकर खाई और सोचा कि यह व्यक्ति बादशाह होने का

भौतिक विचारों के तीव्र बुखारों ने हमारे उलेमा के दिलों को भी किसी सीमा तक दबा लिया है, क्योंकि वे आवश्यकता से अधिक उन्हीं विचारों पर बल दे रहे हैं तथा धर्म और ईमान को पूर्ण करने के लिए उन्हीं को पर्याप्त एवं समग्र समझते हैं। और अवैध एवं अप्रिय शैलियों में रूहानी बरकतों का तिरस्कार कर रहे हैं और मैं सोचता हूँ कि ये तिरस्कार दिखावे से नहीं करते बल्कि वास्तव में उनके दिलों में ऐसा ही जम गया है और उनकी स्वाभाविक कमज़ोरी इस भूकम्प को स्वीकार कर गई है क्योंकि उनके अन्दर सच्चाई से संबंधित प्रकाश की चमक बहुत ही कम और खुश्क वाचालता बहुत अधिक भरी हुई है तथा अपनी राय को इतना सही समझते हैं और उसके समर्थन में ज़ोर देते हैं कि यदि संभव हो तो प्रकाश प्राप्त करने वालों को भी उस अन्धकार की ओर खींच लें। इन उलेमा का इस्लाम की बाह्य विजय की ओर अवश्य ध्यान है परन्तु जिन बातों में इस्लाम की वास्तविक विजय है उनसे अपरिचित हैं।

इस्लाम की वास्तविक विजय इस में है कि जैसे इस्लाम का

शेष हाशिया - दावा करता था और हमें बड़े-बड़े पदों तक पहुंचाता था। किन्तु ये समस्त बातें झूठ निकली और उसकी कोई भविष्यवाणी सच्ची न हुई अपितु हम लोग दरिद्रता और भूख से मर रहे हैं। उचित है कि उसके दुश्मनों से मिलकर पेट भरें। अत: उसकी मूर्खता उसकी तबाही का कारण हुई। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियाँ अपने समय पर पूरी हो गईं। उन मूर्ख झुठलाने वालों के झुठलाने से नबियों की क्या हानि हुई जिसकी अब भी आशंका की जाए। इस आशंका से ख़ुदा तआला की पवित्र कार्रवाई को बन्द किया जाए। निश्चय ही समझना चाहिए कि जो लोग मुसलमान कहला कर और कालिमा कहने वाले होकर जल्दी से अपने दिल में भ्रमों का भण्डार एकत्र कर लेते हैं वे अन्तत: उसी प्रकार बदनाम और अपमानित होने वाले हैं जिस प्रकार मूर्ख और कम समझ यहूदी और यहूदा इस्क्रियूती बदनाम और अपमानित हुए। अत: हे बुद्धिमानो विचार करो। (इसी से)

अर्थ है उसी प्रकार हम अपना सम्पूर्ण अस्तित्व ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दें और अपने अस्तित्व और उसकी भावनाओं से पूर्णतया रिक्त हो जाएँ और इच्छा इरादे तथा सृष्टि उपासना (मख़्लूक़परस्ती) का कोई बुत हमारे मार्ग में न रहे और पूर्ण रूप से ख़ुदा की इच्छाओं में लीन हो जाएँ। इस फ़ना (नश्वरता) के बाद हमें वह प्राप्त हो जाए जो हमारी प्रतिभा को दूसरा रंग प्रदान करे और हमारी मारिफ़त को एक नई उज्ज्वलता (नूरानियत) प्रदान करे और हमारे प्रेम में एक नया जोश पैदा करे और हम एक नए आदमी हो जाएँ और हमारा वह अनादि ख़ुदा भी हमारे लिए एक नया ख़ुदा हो जाए, यही वास्तविक विजय है जिसके कई विभागों में से एक विभाग ख़ुदा से वार्तालाप का भी है। यदि यह विजय मुसलामानों को इस युग में प्राप्त न हुई तो अकेली बौद्धिक विजय उन्हें किसी मंज़िल तक नहीं पहुंचा सकती। मैं विश्वास रखता हूँ कि इस विजय के दिन निकट हैं। ख़ुदा तआला अपनी ओर से यह प्रकाश पैदा करेगा और अपने निर्बल बन्दों का मोक्ष (निजात) देने वाला होगा।

तब्लीग़

मैं इस स्थान पर एक और सन्देश भी जनता को सामान्यतः और अपने मुसलमान भाइयों को विशेषतः भी पहुंचाता हूँ, कि मुझे आदेश दिया गया है कि जो लोग सच्चाई के अभिलाषी हैं वे सच्चा ईमान, सच्ची ईमानी पवित्रता और ख़ुदा के प्रेम का मार्ग सीखने के लिए तथा दूषित, आलस्यपूर्ण और ग़द्दारी से भरे जीवन को त्यागने के लिए मुझ से बैअत करें। अतः जो लोग अपने अस्तित्वों में कुछ शक्ति रखते हैं उन पर अनिवार्य है कि मेरी ओर आयें कि मैं उनका हमदर्द हूँगा और उनका

भार हल्का करने के लिए प्रयास करूँगा तथा ख़ुदा तआला मेरी दुआ तथा मेरे ध्यान में उनके लिए बरकत देगा बशर्ते वे ख़ुदाई शर्तों पर चलने के लिए दिल-व-जान से तैयार होंगे। यह ख़ुदाई आदेश है जो आज मैंने पहुंचा दिया है। इस बारे में अरबी इल्हाम यह है -

اذا عزمت فتوکل علی اللّٰہ و اصنع الفلک باعیننا و وحینا۔
الذین یبایعونک انما یبایعون اللّٰہ ید اللّٰہ فوق ایدھم۔
والسلام علیٰ من اتبع الھدی۔

अल्मुबल्लिग़

ग़ुलाम अहमद उफ़िया अन्हो

1, दिसम्बर 1888 ई.